1 सुभाषितानि

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के माध्यम से छात्रों को नैतिक शिक्षा मिलती है। शिक्षक मधुर वचनों का एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से वाचन करावाएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस गीति पाठ का वाचन कराएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के छात्र से एक श्लोक पढ़वाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

1. सज्जनों के साथ ही बैठना चाहिए। सज्जनों की ही संगति करनी चाहिए। सज्जनों के साथ वाद-विवाद और मित्रता करनी चाहिए। दुष्ट लोगों के साथ कुछ भी आचरण नहीं करना चाहिए।
2. परोपकार रहित मानव जीवन के लिए धिक्कार है। वे पशु धन्य हैं, जिनका मरने पर भी चमड़ा काम आता है।
3. हे लक्ष्मण! सोने की लंका भी मुझे अच्छी नहीं लगती है। माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है।
4. जिस कुल में नारियों की पूजा अर्थात् संस्कार होता है, वहाँ देवता बसते हैं, जिस कुल में नारियों की पूजा नहीं होती है, वहाँ सभी काम निष्फल होते हैं।
5. मेरे आगे कौन-सी परिस्थिति है? (पक्ष में है या नहीं), मेरे कौन मित्र हैं? देश की हालत क्या है? कौन-सा काम मुझे करना है और कौन-सा नहीं? मैं कौन हूँ? प्रत्येक व्यक्ति को इन प्रश्नों के बारे में सोचना चाहिए। हमें सावधान रहना चाहिए।

6. निम्नकोटि के लोग केवल धन की इच्छा करते हैं? मध्यम कोटि के लोग धन और मान दोनों की इच्छा करते हैं। लेकिन उत्तम कोटि के लोग केवल मान की इच्छा करते हैं। उनके लिए मान का ही महत्व है, धन का नहीं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब (घ) अ
2. (क) स्वर्गात् नरकात्
   उत्तमा: अधमा:
   सदभि: असद्भि:
   फला: अफला:
   व्यय: आगम:
3. (क) यत्र नार्य: पूज्यन्ते तत्र के रमन्ते?
   (ख) कै: सह मैत्री करणीया?
   (ग) मान: एव कीदृशं धनम्?
   (घ) स्वर्णमयी लङ्का कस्मै न रोचते?
4. (क) यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:
   (ख) सद्भिरेव सहासीत सद्भि: कुर्वीत संगतिम्
   (ग) परोपकारशून्यस्य धिङ्मनुष्यस्य जीवितम्
   (घ) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीसयी
5. (क) परोपकारशून्यस्य मनुष्यस्य जीवनं धिक् भवति।
   (ख) जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीसयी।
   (ग) यत्र नार्यस्तु न पूज्यन्ते, सर्वा: क्रिया: निष्फला: जायन्ते।
   (घ) मानव: मुहुर्मुहु: क: काल: कानि मित्राणि, को देश: कौ व्ययागमौ, क: अहम् च क: मम शक्ति इति चिन्तयेत्।।

2 जन्तुशाला (संवाद:)

जन्तुशाला (संवाद)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के माध्यम से छात्रों को जीव-जन्तुओं के बारे में जानकारी मिलती है। शिक्षक जीव-जन्तुओं के चित्रों का एक चार्ट तैयार करें। छात्रों को उनके बारे में बताएँ।

- सी.डी. के माध्यम से छात्रों को इस पाठ का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के छात्रों से पाठ का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

अनुज – हमारे पिता हमको यहाँ किसलिए लेकर आए हैं।

अग्रज – क्या तुम नहीं जानते। यह जन्तुशाला है।

अनुज – यहाँ कैसे जन्तु हैं?

अग्रज – विस्तार की आवश्यकता नहीं है। तुम स्वयं ही देख लेना। आओ। (*पिता प्रवेश-पत्र लेकर बच्चों के साथ प्रवेश करते हैं*)

अनुज – मैं देखता हूँ। देखो-देखो वहाँ सरोवर में हंस तैरते हैं। अरे! वह हंस तो सोने के रंग का है। वह बहुत सुंदर है। पहले तो विविध रंगोली चिड़िया को देखों

अनुज – देखो, वहाँ बंदर कूदता है।

पिता – बच्चों एक-एक करके जन्तुओं को देखो।

अनुज – ठिक है।

अग्रज – वहाँ बड़े पिंजरे में सिंह को देखो। वह तो जानवरों का राजा है।

राधा – पिता जी, जो जन्तु यहाँ रहते हैं, उनके भोजन की व्यवस्था कौन करता है।

पिता – वहाँ प्रत्येक जन्तु के लिए एक सेवक होता है। वह ही उनके अनुकूल भोजन और रक्षा का कार्य करता है।

अनुज – पिता जी, हम तो थक गए हैं। कुछ देर विश्राम के बाद भोजन करके अन्य जन्तु देखेंगे। (*वे भोजन करने बैठ जाते हैं*)

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) अ (ग) ब (घ) अ
2. (क) सिंह जन्तुराजः

(ख) वानरः कूर्दतिः

(ग) हंसः स्वर्ण-वर्णः

(घ) चटका विविधवर्णाः

3. (क) कः स्वर्णवर्णः अस्ति?

(ख) तत्र कस्मै सेवकः भवति?

(ग) भोजनं कृत्वा अन्यान् कान् द्रक्ष्यामः?

(घ) वानरः कुत्र कूर्दति?

3 मूषकः महर्षिः च

(महर्षि और चूहा)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व छात्रों को पंचतंत्र की कहानियों के बारे में बताएँ। शिक्षक कक्षा में कहानी का वातावरण तैयार करें।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस कहानी का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के छात्र से पाठ का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

कोई चूहा था। वह विडाल से डरता था। वह महर्षि के पास गया और बोला– "यह विडाल मुझे खाने को तत्पर है। मेरी रक्षा करो।"

महर्षि ने कहा– "तुम भी विडाल हो जाओ।" इस प्रकार वह भी विडाल बन गया।

तब कुत्ते को देखकर वह डरा। वह पुनः महर्षि के पास जाकर बोला– "महर्षि! अब मुझे कुत्ता डराता है।" महर्षि ने दोबारा कहा– "तू भी कुत्ता हो जा।" तब वह विडाल कुत्ता बन गया।

कुछ दिन वह निडर होकर इधर-उधर घूमा। एक बार उसने भी सिंह देखा। सिंह से डरकर उसने महर्षि के पास प्रार्थना की– "महार्षि! सिंह तो मुझे खाना चाहता है।" मुझे बचाओ। तब महर्षि ने उसे सिंह बना दिया। वह सिंह वन में सब जगह घूमता था सभी जानवर उसको नमन करते थे। वह जानवरों का राजा हो गया। धीरे-धीरे वह बड़ा अभिमानी हो गया। एक दिन उसने महर्षि को देखकर सोचा– "शायद यह मुझे पहले जैसा चूहा न बना दे। तब क्यों न मैं इसको खा जाऊँ।" यही सोचकर वह महर्षि की ओर बढ़ा। तब सिंह के इस प्रकार के विचार जानकर महर्षि ने उसको शाप दिया– "फिर से चूहा बन जा।" तब वह सिंह फिर से चूहा बन गया।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) महा + ऋषिः
   (ख) उप + आगच्छत्
   (ग) मद + उन्मत्तः
   (घ) मृग + इन्द्रः
   (ङ) विद्या + आलयः
2. (क) विडालः प्रथमम् कुक्करात्ः त्रस्यति स्मः।
   (ख) ''त्वमपि कुक्कुरः भव'' इति महर्षिः विडालं प्रति अकथयत्।
   (ग) सिंहः भूत्वा सः अचिन्तयत्- ''कदाचित् एषः मां निन्देत् यत् एषः सिंहः पूर्वं मूषकः आसीत्। तदा कथं न एतमेव भक्षयेयम्'' इति।
   (घ) सिंहस्य ईदृशं विचारं ज्ञात्वा महर्षिः तस्मै अशपत्- ''पुनः मूषकः भव''
3. (क) बालकः कुक्कुरात् न भीतः अस्ति।
   (ख) सिंहः पुनः मूषकः अभवत्।
   (ग) त्वं सज्जनं भव।
   (घ) दुर्जनेन् रक्षतु माम्।
   (ङ) तेन मनुष्यः धिक् अस्ति यः इतिदृशं चिन्तयति।

4 व्यपदेशेऽपि सिद्धिः स्यात्

(मुसीबत में भी सिद्धि होती है)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व छात्रों को पंचतंत्र की कहानियों के बारे में बताएँ।
- सी.डी. के माध्यम से भी इस कहानी का वाचन करवाएँ। तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के छात्र से पाठ का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

वर्षा के अभाव से प्यास से व्याकुल होकर हाथियों का झुण्ड अपने राजा के पास जाकर बोला– "महाराज, हमारे जीवन को बचाने का कोई उपाय सोचो? छोटे जीवों के लिए नहाने का स्थान नहीं है और हम सब बिना नहाए मृतक के ही समान हैं। क्या करें? कहाँ जाएँ? तब हाथियों के राजा ने उनको कुछ दूरी पर ले जाकर एक निर्मल तालाब दिखाया।

अब वहाँ तालाब के किनारे छोटे शावक हाथियों के पैरों के नीचे आकर मरने लगे। तभी शिलीमुख नाम के खरगोश ने चिन्तित होकर कहा– "ये हाथी तो हमारा कुल नष्ट कर देंगे।" उसके बाद एक वृद्ध खरगोश ने कहा– "तुम दुखी मत हो। मैं इसका प्रतिकार लूँगा।" ऐसा कहकर उसके शिलीमुख को उपाय बताया। उपाय सुनकर शिलीमुख हाथियों के झुण्ड की ओर जाने लगा। "तभी उससे पूछा गया कि हाथियों के सामने वह कैसे बात करोगी? वे तो बहुत ही बड़े हैं।" उसने कहा कि मैं पास की चट्टान पर चढ़कर बात करूँगा।

उसको चट्टान पर बैठे देखकर यूथपति ने पूछा– "तुम कौन हो? कहाँ से आए हो?"

शिलीमुख बोला– "मैं खरगोश हूँ। भगवान चन्द्र ने मुझे आपके पास भेजा है। मैं उनकी आज्ञा सुनाता हूँ, सुनो– "तुमने चन्द्रसरोवर के रक्षकों को मारकर अनुचित कार्य किया है। मैं उन खरगोशों की रक्षा करता हूँ। इसलिए मेरा नाम शशांक पड़ा है। मेरी आज्ञा है कि तुम उस सरोवर पर जाना बंद कर दो, अन्यथा तुम्हारा, विनाश होगा।" दूत के ऐसा बोलने पर यूथपति ने डरकर कहा– "भगवान् यह तो अज्ञानवश हो गया।"

दूत बोला– "यदि ऐसा ही है तो तुम मेरे साथ उस सरोवर तक चलो, जहाँ भगवान चन्द्र क्रोध से काँप रहे हैं। तुम उन्हें प्रणाम करो, प्रसन्न करो और जाओ।" शिलीमुख यूथपति को उसी सरोवर पर ले गया। जल में हिलते चन्द्रमा को दिखाकर बोला– "देखो, भगवान कितने क्रोधित हैं। इन्हें प्रणाम करो?" यूथपति ने कहा– "देव प्रसन्न हो। यह अपराध मुझसे अज्ञानता में हो गया। मुझे क्षमा करें।" ऐसा कहकर वह हाथियों के दल के साथ दूसरी जगह चला गया। उसके बाद सभी खरगोश खुशी से नाचने लगे। और बूढ़े खरगोश ने शिलीमुख का धन्यवाद किया और बोला– मुसीबत में भी सिद्धि होती है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) अ (ग) ब (घ) अ (ङ) ब
2. (क) जले (ख) चन्द्रदेवस्य (ग) वृष्टेरभावात् (घ) शशकः (ङ) यूथपतिः
3. (क) न + अति + दूरम् (ख) न + अस्ति
   (ग) वृष्टेः + अभावात् (घ) मम + आज्ञया
   (ङ) अतः + अहम्
4. (क) प्रणम्य (ख) श्रुत्वा (ग) आरुह्य (घ) गत्वा
5. (क) यूथपतिः चन्द्रदेवं प्रार्थयत् –''देव! प्रसीद! अज्ञानात् अनेन अपराधः कृतः क्षम्यताम्।''
   (ख) चन्द्रदेवं आज्ञापयत् –''सरस्तीरात् दूरं गच्छ अन्यथा तव विनाशः भविष्यति।''
   (ग) शिलीमुखः गच्छन् अचिन्तयत्–''कथं गजयूथसमीपे स्थित्वा वक्तव्यम्? ते तु अति विशालाः। अतोऽहम् समीपस्थं शिखरम् आरुह्य संवादयामि''।
   (घ) शिलीमुखः चंद्रदेवस्य आज्ञया यूथपतिम् अब्रवीत्।

6. (क) यूयम् अन्यत् स्थानं गच्छत्।
   (ख) अस्माकं कुलं नष्टं भवति।
   (ग) यूथपतिः चन्द्रदर्शनम् करोति।
   (घ) सः शिलीमुखम् प्रति उपायं कथिष्यति।
7. (क) तभी हाथी राजा को थोड़ी दूर जाकर एक निर्मल सरोवर दिखाई दिया।
   (ख) उपाय सुनकर शिलीमुख हाथियों के झुंड की ओर गया।
   (ग) मेरी आज्ञा मानकर आप इस तालाब से दूर चले जाओ, नहीं तो विनाश हो जाएगा।
   (घ) हे देवता! प्रसन्न होइए! अज्ञानतावश हमसे यह अपराध हुआ है, कृपया क्षमा करें।

5 यस्य बुद्धिर्बलं तस्य
(जिसके पास बुद्धि वह बलवान है)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक छात्रों को पंचतंत्र की कहानियों के बारे में बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. माध्यम से करवाएँ।
- कक्षा के छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- कक्षा के समूह-वाचन से छात्रों में अनुशासन आएगा और उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा।
- खुद करके सीखने से उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

रामदास नाम का एक मछुआरा था। वह मछलियाँ पकड़कर बाज़ार में बेचा करता था। एक बार उसने मछली पकड़ने के लिए नदी में जाल फेंका। उसके जाल में एक सोने की मछली फँस गई। उसने मछली को चकित होकर देखा। उसने सोचा कि यदि मैं इस मछली को राजा को दूँ तो वह प्रसन्न होकर मुझे पुरस्कार देंगे।

रामदास मछली लेकर राजसभा की ओर चल दिया। वहाँ द्वार पर एक

चालाक द्वारपाल खड़ा था। उसने रामदास को राजसभा में जाने नहीं दिया। रामदास ने उससे बहुत अनुनय-विनय की, लेकिन वह द्वारपाल मूर्ति की भाँति खड़ा रहा और उसकी एक न सुनी। अंत में मछुआरे ने कहा कि मुझे राजसभा में जो भी पुरस्कार मिलेगा, उसका आधा मैं तुमको दूँगा। द्वारपाल ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और उसे राजसभा में जाने दिया।
राजा सोने की मछली देखकर प्रसन्न हुआ और कोषाध्यक्ष को आदेश दिया की मछुआरे को पचास सोने की मुद्राएँ दें। मछुआरे ने सिर झुकाकर कहा, 'महाराज, मुझे क्षमा करें, मैं यह सोने की मुद्राएँ नहीं ले सकता। राजा ने कहा कि तब तुम जो कुछ भी माँगोगे, मैं तुम्हें दूँगा। मछुआरा बोला, 'महाराज, मुझे पचास डण्डे मारिए।' सभा में बैठे सभी सभासद उसे पागल समझकर विस्मय से देखने लगे। राजा ने उसे कोई अन्य उपहार माँगने को कहा लेकिन उसने पचास डण्डे ही उपहार में माँगे। अन्त में राजा ने सैनिक से उसे पचास डण्डे मारने को कहा। जब सैनिक ने मछुआरे को पच्चीस डण्डे मार दिए, तो उसने सैनिक को ठहरने को कहा। उसने राजा से कहा कि पच्चीस डण्डे आप उस द्वारपाल को मारे क्योंकि मैंने उससे वादा किया था कि मुझे जो भी पुरस्कार मिलेगा, उसका आधा मैं उसे दूँगा। राजा ने सारा वृतांत सुना और सैनिकों को आज्ञा दी कि द्वारपाल को पच्चीस डण्डे मारकर जेल में डाल दो। राजा ने मछुआरे की प्रशंसा की और उसे सोना इनाम में दिया। मछुआरे ने इनाम लेकर राजा का आभार प्रकट किया और घर की ओर चल दिया।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब (घ) अ (ङ) ब
2. (क) राजा धीवराय पुरस्काररूपेण कति स्वर्णमुद्राः अयच्छत्?
   (ख) धीवरः स्वर्णमत्स्यं कस्मै दातुम् इच्छति स्म?
   (ग) सैनिकाः द्वारपालं कुत्र अक्षिपन्?
   (घ) द्वारपालः धीवरम् कस्य अद्र्धभागम् अयाचत्?
3. (क) रामदासः मत्स्यं नीत्वा राजसभाम् अगच्छत्।
   (ख) धीवरः पुरस्काररूपे पञ्चाशत् दण्डप्रहारान् अवाञ्छत्।
   (ग) राजा धीवरस्य बुद्धेः प्रशंसाम् अकरोत्।
4. (क) नद्याम् (ख) राजानम् (ग) आपणे (घ) राज्ञे (ङ) धीवरम्

5.

पदानिः	मूलशब्दः	लिंगम्	वचनम्	विभक्तिः
कारागारे	कारागार	पुल्लिंगम्	एकवचनम्	सप्तमी
मत्स्यान्	मत्स्य	पुल्लिंगम्	बहुवचनम्	द्वितीया
तस्मिन्	तत्	पुल्लिंगम्	एकवचनम्	सप्तमी
तस्मै	तत्	पुल्लिंगम्	एकवचनम्	चतुर्थी
तुभ्यम्	युष्मद्	पुल्लिंगम्	एकवचनम्	चतुर्थी

6. 1. सूर्यः प्रातःकाले पूर्वदिशायाम् उदेति।
   2. प्रभातं जायते, सर्वे जनाः खगाः च जाग्रति।
   3. धीवराः नद्याम् जालम् प्रासारयत्।
   4. ते मत्स्यान् गृहीत्वा आपणे विक्रयं करोति स्म।
   5. एकः कच्छपः नद्ये तीरे वसति स्म।

6 वृक्षाणाम् महत्त्वम्

(वृक्षों का महत्व)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ में छात्रों को पेड़ लगाने के लिए प्रेरित किया गया है। शिक्षक छात्रों को वृक्षों के महत्व के बारे में बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के पास पाठ का अलग-अलग अंश होगा।
- संवाद शैली के इस पाठ से छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।

❖ पाठ का सार

अशोक – ओह! तेज गरमी का समय है और बिजली भी चली गई। गरमी की पीड़ा से बचने के लिए बाग में जाता हूँ। अरे! वर्षा और संदीप भी आए हैं।

वर्षा – (आकर) क्या तुम भी तेज़ धूप से परेशान हो?

अशोक – हाँ। आओ बाग में चलें।

(रास्ते में उन्होंने पेड़ काटते हुए श्रमिकों को देखो)

संदीप – देखो। क्या ये नहीं जानते हैं कि पेड़ों की रक्षा से ही पर्यावरण की रक्षा होती है।

वर्षा – वे तो अधिकारियों की आज्ञा का पालन करते हैं।

अशोक – यदि कुछ वृक्ष भी नष्ट हो जाते हैं तो क्या होगा? यह तो प्रकृति का नियम विरुद्ध है।

संदीप – यहीं तो तुम्हारा अज्ञान है। क्या नहीं जानते कि पर्यावरण का आधार पुष्पों और पल्लवों से भरे हुए वृक्ष होते हैं।

वर्षा – वृक्ष हमें ऑक्सीजन प्रदान कर पर्यावरण को शुद्ध करते हैं। ये समयानुसार मेघों से वर्षा कराने में भी सहायक होते हैं।

संदीप – वृक्ष भूमि से जल ग्रहण करते हैं। वे इसके कुछ भाग का उपयोग करते हैं और शेष इनके छिद्रों से निकलकर वाष्प बनकर वर्षा का जल बन जाता है।

अशोक – मैं जानता हूँ। वृक्ष भूमि पर गिरे हुए पत्तों और फूलों के अलावा, जल मृदा को बहने से रोकते हैं।

वर्षा – दूसरी ओर वृक्ष तो संसार के दुखीजनों को धैर्य रखने की शिक्षा देते हैं।

अशोक – परोपकार का संदेश भी हम वृक्षों से ही प्राप्त करते हैं।

नदी अपना पानी नहीं पीती है। वृक्ष अपना फल नहीं खाते हैं। बादल उन फ़सलों को नहीं खाता है, जिन्हें पानी देता है। इसलिए सज्जन भी सदा दूसरों की भलाई करते हैं।

वर्षा – हमें किसी भी प्रकार से वृक्षों को कटने से बचाना होगा। इसके लिए हमें संकल्प करना होगा।

अशोक और संदीप – ठीक। हम सब मिलकर वृक्षों की रक्षा के लिए लोगों में जागृति पैदा करेंगे।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब (घ) ब (ङ) अ
2. (क) स्वस्थम् (ख) पल्लविता: (ग) प्रचण्ड: (घ) सन्तप्ता:
3. (क) वृक्षा: केषाम्: आगारा: भवन्ति?

   (ख) नद्या: कस्य जलम् न पिबन्ति?

   (ग) श्रमिका: केषु संलग्ना: आसन्?

(घ) वृक्षस्य रक्षणे कस्य रक्षणम्?

(ङ) परोपकारस्य संदेश: कै: प्राप्यते?

4. (क) स्वच्छ जले (ख) प्रधानाचार्य: (ग) पर्यावरणस्य

5. (क) वृक्षा: मेघानाम् वर्षणे सहायका: भवन्ति।

(ख) येन केन प्रकारेण वृक्षकर्तनं अवरोधनीयम्।

(ग) सतां विभूतय: परोपकाराय भवन्ति।

6. 1. अवकरै: 2. कर्तनेन, समूला 3. व्यथाम् 4. सन्त्रस्ता:

7 शठे शाठ्यं समाचरेत्

(दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़तौ)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ में शिक्षक चार्ट के माध्यम से छात्रों को बगुले, मछली, केकड़ा आदि जीवों के बारे में बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से करवाएँ।
- छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के पास पाठ का अलग-अलग अंश होगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

पर्वत के अंचल में एक विशाल सरोवर था। उस सरोवर के जलचर सुखपूर्वक रह रहे थे। वहाँ बरगद के पेड़ के पास एक बूढ़ा बगुला भी रहता था। वह बूढ़ा होने के कारण मछली पकड़ने में असमर्थ था। इसलिए उसने एक उपाय सोचा। वह तट के किनारे बैठकर आँसू बहाने लगा। यह उसे देखकर सरोवर के जलचर चकित थे लेकिन कोई भी उसके समीप नहीं जाता था। तब एक उसके पास जाकर केकड़े ने आकर पूछा, "आज मछलियाँ नहीं खा रहे हो तुम्हारे दु:ख का क्या करण है" बगुले ने कहा– भविष्यवक्ता ने कहा है कि यहाँ छह वर्ष तक वर्षा नहीं होगी और लम्बे

समय तक वर्षा न होने के कारण सरोवर सुख जाएगा। में जलचरों के नाश के विषय में सुनकर मैं दुखी हो जाता हूँ। केकड़े ने पूछा– "इस विपत्ति से बचने का कोई उपाय नहीं है?" बगुला बोला– इस समय तो केवल यही उपाय है कि इस सरोवर को छोड़कर किसी दूसरे बड़े तालाब में चला जाए। यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें पास वाले तालाब में एक–एक करके ले जा सकता हूँ। फिर प्रत्येक मछली सबसे पहले जाने को तैयार हो गई। तब बगुला सबको बारी–बारी से शिला के पास ले जाकर खा जाता। कुछ समय बाद केकड़े ने बगुले से कहा कि सबको ले जाओगे। क्या मुझे यहीं छोड़ दोगे? बगुले ने केकड़े को अपनी पीठ पर बिठाया और उस ओर उड़ा, जहाँ उसने हड्डियों का ढेर लगाया हुआ था। आकाशमार्ग से हड्डियों के ढेर को देखकर केकड़े को सारी स्थिति अच्छी तरह समझ में आ गई। उसने बगुले से कहा कि मुझे जल्दी पहले वाले सरोवर पर ले चलो अन्यथा मैं तुम्हारी गरदन छेद दूँगा। वहाँ पहुँचकर केकड़े ने बगुले की कोमल गरदन अपने दाँतों से काटी और बगुला मर गया। दुष्ट बगुले को उसकी दुष्टता का फल मिल गया।

अभ्यास–उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) स (ग) अ (घ) स (ङ) ब
2. (क) गच्छेयुः (ख) करिष्यामि (ग) भविष्यन्ति (घ) अतिष्ठत्
3. (क) बकोऽपि (ख) अत्रैव (ग) धत्वावदत् (घ) नातिदूरम्
4. (क) वृद्धः बकः (ख) अश्रुपातं (ग) शिलायाम् (घ) सर्वे जलचराः
5. (क) सः मत्स्यान् कुत्र स्थाप्य अभक्षयत्?
   (ख) बकस्य किं धृत्वा कुलीरका उदपतत्?
   (ग) दुष्टः कस्याः फलं प्राप्नोत्?
   (घ) कति वर्ष–पर्यन्त वृष्टिः न भविष्यति?
6. (क) बकः वृद्धावस्था–कारणात् मत्स्यानां वधे असमर्थः अभवत्।
   (ख) बकः उदतरत्–सर्वे इमं जलाशयं त्यक्त्वा विशालतरं जलाशयं गच्छेयुः।
   (ग) कुलीरकः बकस्य ग्रीवां घृत्वा तेन सह आकाशमार्गेण अगच्छत्।
   (घ) बकानुसारेण दैवज्ञाः अकथयन्–यत् षड्वर्ष पर्यन्तं वृष्टि न भविष्यति। अस्मिन् दीर्घकाले जलं बिना सरोवरः शुष्कः भविष्यति।

8 महाकवि कालिदासः (क)

(महाकवि कालिदास)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक संस्कृत के प्रसिद्ध कवियों के चित्र चार्ट पर तैयार करें। छात्रों को महाकवि कालिदास के बारे में बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- कक्षा के समूह-वाचन से छात्रों में अनुशासन आएगा और उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा।
- खुद करके सीखने से उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

महाकवि कालिदास संस्कृत-साहित्य के जगत-प्रसिद्ध कवि थे। इंग्लैंडवासी तो उन्हें शेक्सपियर के नाम से बुलाते हैं। कालिदास के विषय में एक कथा लोकप्रिय है। उज्जयिनी के समीप राजा विद्याधर का राज्य था। उसकी पुत्री विद्योत्तमा बहुत विदुषी थी। शास्त्रार्थ में उसने राजपण्डितों को भी पराजित कर दिया था।

एक बार उसने घोषणा की– "मैं उसके साथ विवाह करूँगी, जो मुझे शास्त्रार्थ में पराजित करेगा। सभी पण्डितों ने ईर्ष्या से सोचा कि इसका विवाह तो मूर्ख के साथ करवाएँगे।"

रास्ते में पण्डितों ने एक युवक को देखा कि वह जिस शाखा पर बैठा था, उसी को कुल्हाड़ी से काट रहा था। यह देखकर पण्डितों ने कहा कि हमारे साथ चलो, हम तुम्हारा विवाह राजकुमारी से करवाएँगे। मूर्ख प्रसन्न होकर उनके साथ चल पड़ा। पण्डितों ने उसे कहा कि जहाँ हम तुम्हें ले जा रहे हैं, वहाँ कुछ भी नहीं बोलना है। यदि तुम बोलोगे तो तुम्हारा विवाह नहीं होगा। मूर्ख ने प्रतिज्ञा करी कि वह कुछ नहीं बोलेगा। पण्डितों ने उसे पण्डित की तरह सजाया और राजा के पास ले जाकर कहा– "महाराज, यह उज्जयिनी नगर के विद्वान आचार्य है। अभी मौनव्रत धारण किया हुआ है। यही राजकुमारी से शास्त्रार्थ करने में समर्थ है। लेकिन यह संकेतों से

ही उत्तर देंगे। राजकुमारी ने शर्त स्वीकार कर ली। राजा प्रसन्न हुआ।" और उसे अगले दिन राजसभा में बुलाया।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) ब (घ) ब
2. (क) अस्याः विवाहः तु केन सह कारयिष्यामः?
   (ख) एषः आचार्यः कम् आचरति?
   (ग) विद्योत्तमा कस्य पुत्री आसीत्?
   (घ) कालिदासः कस्य प्रसिद्धः कविः आसीत्?
   (ङ) पण्डिताः मूर्खं कथम् आभूष्य अनयन्?
3. (क) मूर्खः यस्याः शाखोपरि उपविष्टः आसीत् तामेव शाखां कुठारेण कर्तने मग्नः आसीत्।
   (ख) पण्डिताः तम् अकथयन्-तत्र वयं त्वां नयामः तत्र किमपि न वदतु, यदि वदिष्यति तर्हि विवाहो न भविष्यति।
   (ग) सा उद्घोषितवती-अहं तेन सहैव विवाहं करिष्यामि यः मां शास्त्रार्थे पराजितं कर्तुं शक्नोति।
4.

क्रियापादनि	**मूलधातु**	**वचनम्**	**लकारः**	**पुरुषः**
वदतु	वद्	एकवचनम्	लोट्	प्रथम
अकरोत्	कृ	एकवचनम्	लङ्	प्रथम
दास्यति	दा	एकवचनम्	लृट्	प्रथम
करिष्यामि	कृ	एकवचनम्	लृट्	प्रथम

5. (क) मूढः विद्वान्
   (ख) विजितम् पराजितम्
   (ग) अधः उपरि
   (घ) गच्छ आगच्छ
   (ङ) खिन्नः प्रसन्नः
6. (क) सः कुठारेण शाखां कर्तने आसीत्।
   (ख) अस्याः विवाहं तु मूर्खेण सह कारयिष्यामः।
   (ग) विद्योत्तमा-विदुषी आसीत्।
   (घ) कालिदासः पुरा मूढः आसीत्।
   (ङ) इंग्लैण्डवासिनः व शेक्सपियर नाम्ना सम्बोधयन्ति।

9 महाकविः कालिदासः (ख)

(महाकवि कालिदास)

❖ पाठ का सार

दूसरे दिन विद्योत्तमा मूर्ख के साथ वाद-विवाद करने के लिए तैयार थी। राजकुमारी ने उसे खुला हाथ दिखाया तो उसे लगा कि वह थप्पड़ मारने की धमकी दे रही है और उसने मुक्का दिखाया। पण्डितों ने राजकुमारी को इसकी व्याख्या समझाई कि आचार्य कह रहे हैं कि पाँचों इंद्रियों भले ही अलग हों, लेकिन सभी एक ही मन द्वारा संचालित हैं। विद्योत्तमा ने पुनः एक उँगली दिखाई। मूर्ख ने सोचा कि वह कह रही है कि मैं तुम्हारी एक आँख फोड़ दूँगी। उसने दो उँगलियाँ दिखाकर मन में कहा कि मैं तुम्हारी दोनों आँखें फोड़ दूँगा। पण्डितों ने व्याख्या कर राजकुमारी से कहा, "राजकुमारी आत्मा तो एक ही है परंतु आचार्य के अनुसार इसके आत्मा और परमात्मा दो स्वरूप हैं।" सभा में सभी ने ठीक है, ठीक है, कहकर तालियाँ बजाई और राजकुमारी के साथ युवक का विवाह हो गया। वे दोनों राजमहल में रहने लगे। एक दिन उसने ऊँट को देखा और ऊँची आवाज में 'उटर-उटर' बोलना शुरू कर दिया। राजकुमारी विद्योत्तमा ने अपने भाग्य को कोसाते हुए उसे घर से बहिष्कृत कर दिया। उसे बहुत पश्चाताप हुआ और वह दुखी मन से वाराणसी चला गया। वहाँ उसने सभी शास्त्रों का गहन अध्ययन किया और संस्कृत साहित्य का महान विद्वान बना। वह संसार में कालिदास के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इसके बाद वह अपने घर लौटा और पत्नी को द्वार से आवाज दी। विद्योत्तमा ने पूछा- कोई विशिष्ट विद्वान है? कालिदास ने तीन शब्द बोले- कुमारसंभव, रघुवंशम् और मेघदूतम् महाकाव्यों का रचयिता हूँ। उनका "अभिज्ञान शाकुंतलम नाटक सम्पूर्ण संसार में प्रसिद्ध है। जनश्रुति यह है कि वह महाराज विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे?"

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) मूर्खस्य (ख) संसारस्य (ग) मुष्टिकाम् (घ) वाराणसीम्
   (ङ) विक्रमादित्यस्य

2. (क) भूत्वा (ख) दृष्टवा (ग) दृष्टवत् (घ) आगम्य

3. (क) कुत्र गत्वा सः सर्वशास्त्र निष्णातः अभवत्?

(ख) कस्य निन्दन्ती करोति राजकुमारी तं गृहात् बहिष्कृतवती?

(ग) किम्ः नाटकम् सम्पूर्णे संसारे प्रसिद्धम् अस्ति?

(घ) सः कं दृष्ट्वा उटर् उटर् इति अवदत्?

4. (क) सः अचिन्तयत् 'सा कथयति यत् तव एकं नेत्रं स्फोटयिष्यामि।'

(ख) विद्योत्तमा अपृच्छत्-''अस्ति कश्चिद् वाग्विशेषः?''

(ग) सः 'कुमारसम्भवम्, मेघदूतम्, रघुवंशम् च महाकाव्यानाम् रचनामकरोत्।'

5.

शब्दाः	**मूलशब्दः**	**विभक्तिः**	**लिंगम्**	**वचनम्**
मूर्खेण	मूर्ख	तृतीया	पुल्लिंग	एकवचन
मुष्टिकाम्	मुष्ट्	षष्ठी	नपुंसकलिंग	बहुवचन
पञ्चभूतानि	पञ्चभूत	प्रथमा	नपुंसकलिंग	बहुवचन
महाराज्ञः	महाराजा	षष्ठी	पुल्लिंग	एकवचन

6. (क) कालिदासः विश्वप्रसिद्धः कविः अस्ति।

(ख) मेघदूतम् कालिदासस्य सर्वश्रेष्ठ रचनाम् अस्ति।

(ग) तस्य भार्या विदुषी आसीत्।

(घ) विक्रमादित्य एकं प्रसिद्धम् राजा आसीत्।

10 गणतन्त्र दिवसः

(गणतन्त्र दिवस)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पहले शिक्षक स्वतंत्रता आन्दोलन के स्वतंत्रता सेनानियों के चित्रों का एक चार्ट तैयार करें।
- शिक्षक छात्रों को गाँधी, नेहरू, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आदि के बारे में बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से करवाएँ और फिर संवाद शैली के इस पाठ का छात्रों से वाचन करवाएँ।

- कक्षा के समूह-वाचन से छात्रों में अनुशासन आएगा और उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा।
- कक्षा के छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- खुद करके सीखने से उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

आचार्य – बालको! क्या तुम सब जानते हो कि कल कौन-सा राष्ट्रीय पर्व है?

अनिकेत – हाँ, कल सड़सठवां गणतंत्र दिवस है। यह तो हमारा राष्ट्रीय पर्व है।

नितेश – हमारा स्वतंत्रता दिवस तो अगस्त महीने में होता है, परन्तु जनवरी महीने में इस उत्सव को किसलिए मनाते हैं?

आचार्य – भारत तो 1947 में आजाद हुआ लेकिन भारत का नया संविधान 26 जनवरी, 1950 को लागू किया गया।

पुष्पा – इसलिए हम सब प्रतिवर्ष 26 जनवरी को इस महोत्सव को मनाते हैं।

अभिषेक – भारत की राजधानी दिल्ली में इस महोत्सव को उत्साह के साथ मनाते हैं। इस दिन प्रातःकाल लाखों लोग इंडिया गेट पर इकट्ठे होते हैं।

प्रवीण – सर्वप्रथम प्रधानमंत्री महोदय और सेनाध्यक्ष राष्ट्रपति महोदय का स्वागत करते हैं। इसके बाद राष्ट्रपति ध्वजारोहण करते हैं।

नितेश – यहाँ जल सेना, थल सेना और वायु सेना के सैनिक राष्ट्रपति को सलामी देते हैं।

अभिषेक – उसके बाद युद्ध के उपकरणों, अश्वारोहियों, उष्ट्रारोहियों, गजारोहियों और पैदल सैनिकों की शोभा यात्रा निकलती है।

अनिकेत – विभिन्न राज्यों की झाँकियाँ भी दिखाई जाती है। यह यात्रा इंडिया गेट से शुरू होती है और बहुत-से राजमार्गों का भ्रमण कर लालकिले पर समाप्त हो जाती है।

आचार्य – और रात्रि में भी राष्ट्रपति-भवन, संसद भवन, अन्य सरकारी इमारतों में रोशनी की जाती हैं।

पुष्पा – हाँ! मैंने वहाँ देखा है। वह दृश्य तो बहुत ही मनोहर होता है।

अभिषेक – क्या भारत के राज्यों में भी यह महोत्सव मनाया जाता है?

आचार्य – हाँ! राज्यों की राजधानी में भी मुख्यमंत्री या राज्यपाल इस महोत्सव का सोत्साह आयोजन करते हैं। यह दिन भारत के लिए गौरव का है।

सभी छात्र–हम सब दूरदर्शन पर यह समारोह देखेंगे। भारत हमारा गौरव है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) अ (घ) ब
2. (क) महोत्सवम् – वयं प्रतिवर्षं जनवरीमासस्य षड्विंशायां तिथौ महोत्सव कुर्मः।
   (ख) तिथौ – स्वतन्त्रता दिवसः अगस्तमासस्य पञ्चदशतिथौ समायोज्यते।
   (ग) स्वतन्त्रता-दिवसः – भारताय गौरवप्रदः अस्ति।
   (घ) विद्युद्दीपकैः – रात्रौ राष्ट्रपति-भवने, संसद-भवने, अन्य भवनेषु च विद्युद्दीपकैः प्रकाश क्रियते।
3. (क) के राष्ट्रपतिम् अभिनन्दति?
   (ख) का रक्तदुर्गे समाप्तिं गच्छति?
   (ग) राज्यानां कानि अपि तत्र प्रस्तूयन्ते?
   (घ) गणतन्त्र दिवसः कस्मै गौरवप्रदः अस्ति?
   (ङ) जनाः कुत्र संघीभवन्ति?
4.

क्रियापदानि	धातुः	लकारः	वचनम्	पुरुषः
जानीथ	जान्	लट्	बहुवचन	मध्यम
कुर्मः	कृ	लट्	बहुवचन	उत्तम
द्रक्ष्यामः	दृश्	लट्	बहुवचन	उत्तम
वर्तते	वृत्	लट्	एकवचन	प्रथम

5. (क) 1947 तमे वर्षे (ख) जनवरी
   (ख) भारतस्य नवीनं संविधानं 1950 ईशवीयाब्दे जनवरी मासस्य षड्विंशायां तारिकायां कार्यान्वितम् अभवत।
   (ग) (अ) अद्य (ब) गणतन्त्रः (ग) नवीन

11

नीति वचनानि

(नीति के वचन)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस नीति पाठ में छात्रों को नीति वचनों के माध्यम से प्रेरित किया गया है। शिक्षक नीति वचनों का एक चार्ट तैयार करें।

- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- इस पाठ से छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।

❖ पाठ का सार

1. जो व्यक्ति विनम्र है और नित्य वृद्धों की सहायता करता है। उसकी आयु, विद्या, यश और बल में वृद्धि होती है।
2. संसार में चंदन को शीतल माना जाता है, लेकिन चंद्रमा चंदन से भी शीतल होता है। मधुरभाषी लोगों का साथ चंदन और चंद्रमा की तुलना में अधिक शीतलता देने वाला होता है।
3. जिस मनुष्य की वाणी मीठी है, जिसका कार्य परिश्रम से युक्त है, जिसका धन दान करने में प्रयुक्त होता है, उसका जीवन सफल है।
4. साहित्य, संगीत तथा कला से रहित व्यक्ति वास्तव में पूँछ और सींग के बिना वाला पशु है। जो घास न खाता हुआ भी जीवित है। वैसे यह पशुओं के लिए गर्व की बात है कि इंसान भी पशु है।
5. बीते हुए पर शोक नहीं करते हैं, भविष्य के बारे में चिंता नहीं करते हैं। वे चतुर लोग होते हैं, जो वर्तमान काल का उचित उपयोग करते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) अ (घ) ब
2. (क) चत्वारि तस्य वर्धन्ते – आयुर्विद्यायशोबलम्
   (ख) वर्तमानेन कालेन – प्रवर्तन्ते विचक्षणाः
   (ग) प्रह्लादयति च पुरुषं – यथा मधुरभाषिणी वाणी
   (घ) लक्ष्मीः दानवती यस्य – सफलम् तस्य जीवितम्
   (ङ) साहित्य-संगीत-कला-विहीनः – साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः
3. (क) आलस्यम् परिश्रमः
   (ख) सफलम् असफलम्
   (ग) वृद्धः युवा
   (घ) शीतलम् उष्णम्

(ङ) उन्नतिम् अवनतिम्

(च) कुसंगतिम् सत्संगतिम्

4. (क) मधुरा (ख) दानवती (ग) साहित्य-संगीत-कला-विहीनः

5. शीतलम् सलिलम्

मधुरभाषिणी वाणी

श्रमवती क्रिया

परमम् भागधेयम्

वर्तमानेन कालेन

शीतला छाया

6. (क) विद्वानः गते शोको न कर्तव्यो।

(ख) सः सदा मधुरं वदति।

(ग) यस्य समीपे धनं न अस्ति, तस्य समीपे मित्राः न भवन्ति।

(घ) मधुरवाणी हृदयं प्रह्लादयति।

(ङ) अहं नित्यं गुरुजनान् प्रणामं करोमि।

12

एकलव्यस्य कथा

(एकलव्य की कथा)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ में छात्रों को गुरु-शिष्य के माध्यम से प्रेरणा दी गई है। इस पाठ के अलावा शिक्षक गुरु-भक्ति से संबंधित अन्य कथाओं से भी छात्रों को अवगत कराएँ।
- छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- संवाद शैली के इस पाठ में दो-दो बच्चों से पाठ का वाचन करवाया जाए।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से करवाएँ।

❖ पाठ का सार

शुभ – रितेश, तुम क्या पढ़ते हो?

रितेश – मैं एकलव्य की कथा पढ़ता हूँ।

शुभ – एकलव्य कौन है? मैं भी उसकी कहानी सुनूँगा।

रितेश – यह कथा 'महाभारत' नामक ग्रंथ से ली गई है।

शुभ – उसकी कथा में क्या है?

रितेश – शुभ, उसकी कहानी सुनो।
एकलव्य एक भील बालक था। वह वन में रहता था। बचपन से ही उसकी रुचि धनुर्विद्या में थी।

शुभ – और जैसे मेरी रुचि चित्र बनाने में है।

रितेश – हाँ। वह आचार्य द्रोण के पास गया और उनसे प्रार्थना की कि मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ। मुझ पर कृपा करो। परंतु आचार्य ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार कर दी।

शुभ – क्या वह योग्य नहीं था?

रितेश – वह तो योग्य था, परंतु आचार्य ने कहा, कि मैं तो राजपुत्रों को ही पढ़ाता हूँ। दूसरों के लिए समय नहीं है।

शुभ – तब एकलव्य ने क्या किया?

रितेश – वह दृढ संकल्प कर वन में गया और आचार्य की मूर्ति बनाई तथा उस मूर्ति के सामने ही अभ्यास करने लगा और इस प्रकार वह कुशल धनुर्धर बन गया।

शुभ – वह तो सच्चा गुरुभक्त और दृढ़निश्चयी था। क्या आचार्य उसके विषय में जानते न थे।

रितेश – शुभ! चुप होकर सुनो। एक बार आचार्य कौरव-पाड़वों के साथ वन में घूम रहे थे। तब एक कुत्ता एकलव्य को देखकर भौंका। एकलव्य ने बाण मारकर उसका मुँह सिल दिया।

शुभ – तब क्या हुआ?

रितेश – सुनो, सुनो। आचार्य यह दृश्य देखकर एकलव्य के पास गए और उसके गुरु के बारे में पूछा।

शुभ – उसने क्या कहा? जल्दी बताओ।

रितेश – उसने द्रोण की मूर्ति दिखाई और प्रणाम कर बोला– आप ही मेरे गुरु हैं। कौरवों और पांडवों ने विस्मित होकर यह दृश्य देखा।

शुभ – तब क्या हुआ?

रितेश – आचार्य ने कहा कि यदि मैं तेरा गुरु हूँ, तो गुरु-दक्षिणा दो।

शुभ – उन्होंने क्या माँगा?

रितेश – आचार्य ने कहा कि अपने दाएँ हाथ का अँगूठा मुझे दो।

शुभ – यह तो उचित नहीं है। अँगूठा देकर किस प्रकार धनुष चलाना संभव है?

रितेश – एकलव्य ने इस विषय में कुछ नहीं सोचा और तुरंत अपना अँगूठा काटकर उन्हें दे दिया।

शुभ – क्या उसके बाद उसने धनुष का अभ्यास छोड़ दिया?

रितेश – शुभ! नहीं, उसने बाएँ हाथ से अभ्यास किया और महाभारत के युद्ध में कौरवों की सहायता की।

शुभ – उसकी गुरु भक्ति, उसकी एकाग्रता और श्रम भावना धन्य है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) ब (घ) ब
2. (क) पाठयामि (ख) यच्छ (ग) अरचयत् (घ) भविष्यति
3. (क) आचार्यः तम् किम् दातुम् अकथयत्?
   (ख) कः तस्य प्रार्थनाम् अस्वीकृतवान्?
   (ग) किम् साक्षात्कृत्य सः धनुर्विद्याया: अभ्यासम् अकरोत्?
   (घ) केषां कुक्कुरः तम् दृष्ट्वा अभषत्?
   (ङ) एकलव्यः कैः कुकुरस्य मुखम् असीव्यत्?
4. (क) सः तस्य मूर्तिम् अरचत्।
   (ख) सः गुरुदक्षिणां यच्छतु।
   (ग) कुक्कुरः तम् दृष्ट्वा भषति।
   (घ) एकलव्यः द्रोणस्य शिष्यः आसीत्।
5. (क) नास्ति (ख) एतदर्थम् (ग) श्रोतुमिच्छामि (घ) नोचितम्
   (ङ) प्रत्यवदत्
6. (क) द्रोणाचार्यः पाण्डवस्य गुरुः आसीत्।
   (ख) एकलव्यः एकः भिल्लः बालः आसीत्।
   (ग) त्वं एतत् कथां श्रुणु।
   (घ) महाभारतः प्राचीनः महाग्रंथः अस्ति।
   (ङ) महाभारते कौरवः पाण्डवः च युद्धे वर्णनः अस्ति।

13

किञ्चिद अपि न

(कुछ भी नहीं)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ में छात्रों को नैतिक शिक्षा के लिए प्रेरित किया गया है। शिक्षक इसके अतिरिक्त छात्रों को भारत के प्रसिद्ध विदूषक तेनालीरामा और बीरबल के बारे में भी बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

मुल्ला नसीरुद्दीन बगदाद का एक चतुर बुद्धिमान नागरिक था। उसकी कुशलता से प्रभावित होकर वहाँ के राजा ने उसे अपना न्यायाधीश नियुक्त किया। मुल्ला नसीरुद्दीन एक न्यायप्रिय व्यक्ति था।

उस नगर में एक धूर्त व्यक्ति रहता था। वह किसी भी प्रकार लोगों को ठगकर अपना जीवन-निर्वाह करता था। एक बार उसने मार्ग में लकड़ियाँ ले जाते हुए लकड़हारे को देखा। अचानक लकड़हारे लकड़ियाँ भूमि पर गिर गईं। चिन्तित लकड़हारे ने उस ठग से सहायता माँगी। ठग ने पूछा कि यदि मैं तुम्हारी सहायता करूँ, तो तुम बदले में मुझे क्या दोगे? लकड़हारा बोला– "कुछ भी नहीं।" ठग ने कुछ क्षण सोचने के बाद उसकी सहायता कर दी। फिर उस लकड़हारे ने "कुछ भी नहीं" कहा। लकड़हारा आश्चर्य से बोला कि "मैंने कुछ भी नहीं" देने को कहा है? मैं असमर्थ हूँ। ठग ने बार-बार उससे "कुछ भी नहीं" माँगा। लेकिन लकड़हारे ने असमर्थता दिखाई।

वहाँ लोग इकट्ठे हो गए। वे सब लकड़हारे को नसीरुद्दीन के पास ले गए। ठग को भी लकड़हारे के साथ ले जाया गया। सारी वार्ता सुनने के बाद नसीरुद्दीन ने ठग से पूछा कि क्या तुम "कुछ भी नहीं" ही चाहते हो। ठग बोला– यदि लकड़हारा मुझे एक हजार रुपए दे तो मैं संतुष्ट हो

जाऊँगा। कुछ देर सोचकर नसीरुद्दीन ने कहा, "चिंता मत करो।" तुम "कुछ भी नहीं" ही ग्रहण करोगे। सभी लोग सोचने लगे कि न्यायाधीश कैसे "कुछ भी नहीं" देंगे।

नसीरुद्दीन ने ठग को एक घड़ा दिखाया। घड़ा खाली था। नसीरुद्दीन ने ठग से पूछा कि घड़े में क्या दिखता है? वह बोला– "कुछ भी नहीं"। नसीरुद्दीन ने तुरंत उसे आज्ञा दी कि "कुछ भी नहीं" लो।

सभी लोग ऊँची आवाज में हँसे और उन्होंने तालियाँ बजाई। ठग ऐसा प्रतिदान पाकर सिर नीचा कर अपने घर की ओर चल दिया और लकड़हारे ने नसीरुद्दीन को धन्यवाद दिया और प्रसन्नचित होकर घर गया।

अभ्यास–उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) ब (घ) अ (ङ) ब
2. (क) गृहाण यच्छ
   (ख) प्रसन्नः रुष्टः
   (ग) रिक्तम् पूर्णम्
   (घ) प्रार्थयत् आदिशत्
   (ङ) चतुरः मूर्ख
3. (क) घटे किम् आसीत्?
   (ख) सहसा काष्ठिकस्य कानि भूमौ अपतन्।
   (ग) न्यायाधीशः धूर्तम् किम् आनेतुम् आदिशत्?
   (घ) धूर्तः कस्य सहायताम् अकरोत्?
4. (क) मुल्ला नसीरुद्दीनः न्यायप्रियः व्यक्तिः आसीत्।
   (ख) अन्ततः धूर्तः सहायतायाः प्रतिदाने सहस्त्ररूप्यकाणि वाञ्छति स्म।
5. (क) न्यायाधीशं (ख) काष्ठिकं (ग) न्यायाधीशम्
   (घ) मह्यम्
6. (ग) दातुम् (घ) आनेतुम् (ङ) वञ्चयित्वा (च) बुद्धिमत्

14

प्रहेलिका:

(पहेलियाँ)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ से छात्रों को प्रहेलिका (पहेलियाँ) के माध्यम से प्रेरणा दी गई है। इस पाठ के अतिरिक्त छात्रों को अन्य बाल-पहेलियों से अवगत कराएँ।
- कक्षा में छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इस पाठ से छात्रों की तर्कशक्ति का विकास होगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।

❖ पहेलियों का सार

1. मेरे पैर नहीं हैं, पर मैं बहुत दूर जाता हूँ। साक्षर हूँ, पर विद्वान नहीं हूँ। मेरा मुँह नहीं है और स्पष्ट बोलने वाला हूँ। जो जानता है, वह विद्वान है। (पत्र)
2. यान की तरह मेरे अंग हैं। हरि (विष्णु) का शस्त्र हूँ। भारत माता का चिह्न हूँ और गोल आकार में चलता हूँ। जो जानता है, वह विद्वान है। (चक्र)
3. कस्तूरी कहाँ जाती है? हाथियों के कुल का कौन नाश करता है? कायर युद्ध में क्या करते हैं? इन तीनों पंक्तियों का उत्तर हिरण, सिंह और भागना है।
4. पेड़ की चोटी पर रहता हूँ और मैं पक्षियों का राजा नहीं हूँ। तीन नेत्र वाला हूँ और मेरे हाथ में शूल नहीं है। छाल के वस्त्र पहनता हूँ और सिद्‌ध योगी नहीं हूँ। जल से भरा हुआ हूँ और न घड़ा हूँ, न बादल हूँ। (नारियल)
5. किसके दो दाँत मुख से बाहर हैं? किसकी लम्बी नाक है? नाक से ही वह सभी काम करता है। वह शोभावान कौन है? (हाथी)

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) अ (घ) ब
2. (क) मृगात्: (ख) पत्रम् (ग) गजस्य (घ) चक्रम् (ङ) वृक्षा:/वृक्षे
3. (क) हरिण मृग:
   (ख) हरे: विष्णो:
   (ग) वर्तुलाकारम् गोलाकारम्
   (घ) गज: हस्ति:
   (ङ) विद्वान् पण्डित:
4. (क) भीरु: युद्धे पलायनम् करोति।
   (ख) नासिकया पुरकं सहायतां करोति।
   (ग) भारतभूपते चिह्नम् चक्रम् अस्ति।
5. (क) भारतभूपते: चिह्नम् चक्रम् अस्ति।
   (ख) त्वं पत्रं पठ।
   (ग) गरुड: खगस्य राजा अस्ति।
   (घ) सिंहात् मृगा: पलानयते।
   (ङ) मम मित्रम् भीरु अस्ति।

15

मेट्रो रेलयानम्

(मेट्रो रेलयानम्)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ में छात्रों को विज्ञान के लिए भी प्रेरित किया गया है। शिक्षक मेट्रो रेल के बारे में छात्रों को बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से करवाएँ।
- छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा और उनका मनोबल बढ़ेगा।

❖ पाठ का सार

स्वतंत्रता के पश्चात भारत में सर्वत्र विकास किया गया। सभी नगर विस्तृत और सुविधा संपन्न हो गए। कार्य व्यापार की सुविधा को देखते हुए लोग रोज नगरों में दौड़ते हैं। इस कारण नगर की जनसंख्या भी तेज गति से बढ़ रही है। लोग काम करने के लिए दूर-दूर तक जाते हैं।

जनसंख्या की वृद्धि के साथ वाहनों की संख्या में भी वृद्धि हुई है। वाहनों की अधिकता के कारण मार्ग में आने-जाने में बहुत कष्ट होता है। इस समस्या को दूर करने के लिए यूरोप देश के वैज्ञानिकों ने मेट्रो नामक तीव्रगति की रेल सेवा तैयार की।

भारत के कोलकाता महानगर में भी सर्वप्रथम मेट्रो रेल सेवा प्रारंभ की गई। उसके बाद भारत की राजधानी दिल्ली महानगर में भी मेट्रो रेल सेवा शुरू की गई। यहाँ मेट्रो रेल सेवा दो प्रकार से चलती हैं। प्रथम, भूमि के ऊपर चलती हैं और दूसरी, भूमि के नीचे चलती है। यह रेल सेवा प्रदूषणरहित और वातानुकूलित है। यहाँ रेलवे स्टेशन का कोलाहल और भीड़ देखने को मिलती है। यहाँ स्वच्छ रेलवे स्टेशन और उत्तम सुरक्षा व्यवस्था दिखाई देती है। हजारों लोग एक स्थान से दूसरे स्थान तक सुखपूर्वक जाते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) कक्षाः (ख) जनाः (ग) वैज्ञानिकैः (घ) गौरवम् (ङ) नगरं
2. (क) जनसंख्यया सह केषां संख्या अपि वर्धते?
   (ख) कस्य पश्चात् सर्वत्र विकासः जातः?
   (ग) काः प्रदूषणरहिता अस्ति?
   (घ) रेलस्थानकं कीदृशं वर्तते?
3. (क) द्वे (ख) मेट्रोरेलयानं (ग) मेट्रो (घ) वाहनानां
4. (क) इयम् रेलसेवा प्रदूषण-रहिता, वातानुकूलिता च अस्ति।
   (ख) कार्यव्यापारयोः सुविधां दृष्ट्वा जनाः नगरानि प्रति धावन्ति।
5. (क) इयम् वातानुकूलिता रेलयानं अस्ति।
   (ख) मेट्रो रलस्थानम् आधुनिक सुविधासम्पन्नानि जातानि।
   (ग) इयम् द्रुतगामी अस्ति।
   (घ) जनाः मेट्रो रेलयानम् सुख अनुभवं करोति।
   (ङ) मेट्रो यातायातस्य लोकप्रिय साधनं अस्ति।

6. पदनि:	मूलशब्द:	विभक्ति:	वचनम्	लिंगम्
भूमे:	भूमि	पंचमी	एकवचनम्	स्त्रीलिंगम्
यात्रिण:	यात्रि	प्रथमा	बहुवचनम्	पुल्लिंगम्
राजधान्याम्	राजधानी	सप्तमी	एकवचनम्	स्त्रीलिंगम्
नगराणि	नगर	प्रथमा	बहुवचनम्	नपुसंकलिंगम्

16 सर्वं परवशं दु:खम्

(पराधीनता में ही सब दुख है)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के माध्यम से छात्रों को नैतिक शिक्षा की प्रेरणा दी गई है। शिक्षक इस कहानी के अलावा अन्य नैतिक शिक्षा की कहानियों के बारे में भी बताएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम करवाएँ।
- छात्रों को पाँच-पाँच के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को पाठ का अलग-अलग अंश पढ़ने को दिया जाएगा।
- इससे छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।

❖ पाठ का सार

किसी नगर में श्याम नाम का एक गरीब बालक रहता था। वह बहुत बुद्धिमान था। उसकी धनार्जन करके स्वतंत्र रूप से व्यापार करने की इच्छा थी। लेकिन धनाभाव के कारण वह ऐसा करने में असमर्थ था।

उसका एक सिद्धांत था। छह महीनों में एक लघु झूठ बोलना और साल के अंत में एक बड़ा झूठ बोलना था। श्याम ने नगर में एक सेठ के यहाँ काम करना शुरू किया। उसने सेठ को अपने सिद्धांत के बारे में भी बताया। सेठ हँसकर बोला– "झूठ कौन नहीं बोलता है? छह महीने के बाद देखेंगे। तुम काम शुरू करो।"

श्याम परिश्रमी और आज्ञापालक सेवक था। उसके काम से सेठ प्रसन्न हुआ। परन्तु सेठ श्याम के साथ दास जैसा व्यवहार करता था। वह उसको

घर जाने के लिए छुट्टी भी नहीं देता था। श्याम मज़बूर था, फिर भी कुछ न बोलकर अपना काम करता था।

एक बार वह सेठ अपने मित्र के साथ नगर के बाहर उद्यान में गया। वहाँ उसे याद आया कि तिजोरी का द्वार तो खुला ही रह गया। उसने श्याम को आदेश किया कि घर जाकर सेठानी को तिजोरी के बारे में बताएँ।

रास्ते में चलते हुए श्याम ने सोचा कि कार्य करते हुए छह महीने बीत गए हैं लेकिन मैंने लघु झूठ नहीं बोला है। आज ही बोलूँगा। घर पहुँचकर उसने सेठानी को कहा, "सेठ जी दुर्घटना में मर गए।" यह सुनकर सेठानी ऊँचे स्वर में रोकर बोली– "यदि मेरा स्वामी ही इस संसार में नहीं है तब यह ऐश्वर्य भी व्यर्थ है। सब कुछ नष्ट कर दो।" श्याम ने वैसे ही आज्ञा का पालन किया।

इसके बाद वह सेठ के पास रोता हुआ गया और ऊँचे स्वर में बोला– "सेठ जी घर में दीवार गिरने से सेठानी और बच्चे मर गए। सेठ व्याकुल होकर अपने मित्र के साथ घर की ओर दौड़ा। उसे रास्ते में अपनी पत्नी और बच्चे दिखाई दिए। वे भी रो रहे थे। सभी आश्चर्यचकित थे। सेठ ने श्याम से पूछा– "यह क्या? तुमने किसलिए ऐसा झूठा बोला।" श्याम ने उत्तर दिया– "मेरा सिद्धांत। छह महीने बीत गए। अतः मैंने लघु झूठ बोला।" सेठ ने सोचा– "इसका छोटा झूठ जब इतना विनाशकरी है, तब यदि जब यह बड़ा झूठ बोलेगा, तब क्या होगा?" सेठ ने विचार करके उसे बहुत-सा धन देकर स्वतंत्र कर दिया। घर जाकर उसने व्यापार शुरू किया और प्रसिद्ध व्यापारी बना।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) ब (घ) अ (ङ) अ
2. (क) निर्धनः — धनी
   (ख) आत्मवशम् — परवशम्
   (ग) बृहद् — लघु
   (घ) आवृतम् — अनावृतम्
   (ङ) असत्यम् — सत्यम्
3. (क) सः प्रसिद्धः कः अभूत्?
   (ख) श्रेष्ठी श्यामाय किम् दत्वा गृहं प्रेषितवान्?
   (ग) तेन कस्याः द्वारम् आवृतं न कृतम्?
   (घ) श्रेष्ठी तेन सह कीदृशम् व्यवहारं करोति स्म?

(ङ) सर्वम् आत्मवशं किम्?

4. (क) धनाभावात् सः व्यापारं कर्तुम् असमर्थः आसीत्।

(ख) श्यामः निर्धनः अपि बुद्धिमानः बालकः आसीत्।

(ग) "अस्य लघु असत्यं तु विनाशकारि, यदि सः वृहद् असत्यम् वदिष्यति तर्हि किम् भविष्यति? सः विचारं कृत्वा तं स्वतंत्रम् अकरोत्।

5. (क) भारतविकासस्य (ख) उद्योगाः (ग) उपग्रहाणां (घ) विश्वे

(ङ) परमाणुशक्तिसम्पन्नः

17

आह्वानम्

(आह्वान)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के माध्यम से छात्रों को भारत में ऋतु परिवर्तन के बारे में जानकारी मिलती है। शिक्षक छात्रों को छह ऋतुओं के बारे में संक्षिप्त में समझाएँ।
- सी.डी. के माध्यम से इस पाठ का वाचन करवाएँ।
- तीन-चार बार पुनरावृत्ति के बाद छात्र भी इसे अच्छी तरह से पढ़ पाएँगे।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह को पाठ का कुछ अंश पढ़वाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

भारत में छह ऋतुएँ होती हैं। इनमें वसन्त सुंदर होती है। जब शिशिर जाती है, तब वसन्त ऋतु आती है। इस ऋतु में वातावरण में ठंड समाप्त हो जाती है। वसन्त ऋतु में मंद और सुगंधित हवा चलती है। वृक्षों पर नए पत्ते आते हैं। पौधों और लताओं पर फूल निकलते हैं, फूलों पर भँवरे गुंजन करते हैं। आम के पेड़ पर कोयल की कूँ- कूँ लोगों का मन हर लेती है। सब और उल्लास का साम्राज्य हो जाता है। उद्यान में सरसों के फूल पीले वस्त्र पहनकर भूमि के सौंदर्य को बढ़ाते हैं।

जैसे भारत में छह ऋतुएँ होती हैं और दूसरी जगह नहीं होती हैं। हम सब उत्साहित होकर इस ऋतु के स्वागत के लिए आयोजन करते हैं। वसन्त पंचमी का उत्सव वसन्त के आने की सूचना देता हैं, सभी लोग पीले वस्त्र धारण करते हैं और सरस्वती पूजा करते हैं। हमारा हर्षदायक रंगोत्वस 'होली' भी इस ऋतु में आता है। लोग एक-दूसरे के ऊपर रंग डालते हैं, बैर भुलाकर आलिंगन करते हैं, नाचते और गाते हैं। छह ऋतुओं में वसंत ही श्रेष्ठ ऋतु है, इसलिए वसन्त को 'ऋतुराज' कहते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) ब (घ) ब (ङ) अ
2. (क) पवनः (ख) शिशिर-ऋतोः (ग) सुखदः (घ) कोकिलानाम्
3. (क) वृक्षा काः उद्भवन्ति?
   (ख) सर्वत्र कस्य साम्राज्यं राजते?
   (ग) कस्मिन् उत्सवे जनाः सरस्वती पूजयन्ति।
   (घ) सर्षपाः अपि कस्याः सौंदर्य वर्धयन्ति?।
   (ङ) जनाः कीदृशाः आयोज्य ऋतूणाम् स्वागतं कुर्वन्ति?
4. (क) शुद्धम् (ख) अशुद्धम् (ग) अशुद्धम् (घ) शुद्धम् (ङ) अशुद्धम्
5. (क) होलिकोत्सवः सर्वजनानां कृते प्रियः उत्सवः अस्ति।
   (ख) होलिकात्सवे जनः परस्परं रंगान् जलं च क्षिपन्ति।
   (ग) जनाः बालकाः च प्रसन्नाः भवन्ति।
   (घ) जनाः उत्सवः वाक्षरे मिष्ठान्नानि खादन्ति।

18

पत्रलेखनम्

(पत्र-लेखन)

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (1) सविनयं (2) मन्ये (3) यत् (4) क्रेतुम्
   (5) भवता (6) सुलभानि (7) अचिरात् (8) अधोलिखितानि
   (9) मम (10) प्रेषणीयानि

2. (1) निवेदनम् (2) अस्मिन् (3) वर्षे (4) विद्यालयात्
(5) उत्तीर्णा (6) त्रिंशत् (7) मम (8) विशुद्धम्
(9) अस्मि (10) यथाशीघ्रम्

अभ्यास-पत्रम् उत्तरमाला

भाग (अ)

एकपदेन उत्तरत

1. (क) ब (ख) ब

पूर्ण वाक्येन उत्तरत

(क) वर्षाकाले वृष्टिपातेन नद्याः जलेन कृषिक्षेत्रमाणि प्लावितानि भवन्ति।
(ख) एषा जलमूला विद्युत 'हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर' इति नाम्ना प्रसिद्धा।

भाषिककार्यम्।

(क) मत्स्य (ख) बद्ध + क्त्वा (ग) कृषकाः

भाग ब

2. (क) किमसौः (ख) सद्भैव (ग) अन्नोत्पादनम् (घ) सहासीत
3. (क) दृष्ट्वा (ख) ग्रहीतुम् (ग) आरुह्य (घ) वञ्चित्वा
4. (क) रामदासः मत्स्यं नीत्वा राजसभाम् गमिष्यति।
(ख) त्वम् वृक्षाणां कर्तनं न कुरु।
(ग) दुष्टं मित्रं सर्वदा त्यज।
(घ) वृक्षा मेघानाम् निर्माणे सहायकाः भवन्ति।

5.

	(क)	(ख)
क.	चतुरः	मूर्खः
ख.	प्रार्थयत्	आदिशत्
ग.	गृहाण	यच्छ
घ.	प्रसन्नः	रुष्टः
ङ.	रिक्तमः	पूर्णम्

भाग (स)

6. **एक पदेन उत्तरत–**

(क) ब
(ख) अ

पूर्ण वाक्येन उत्तरत–

(क) 'अहं तेन सह विवाहं करिष्यामि चः मम् शास्त्राथै पराजितं कर्तुं शक्नोति।'

(ख) पण्डिताः अचिन्तयन्– 'अस्याः विवाहं तु मूर्खेन सह कारयिष्यामः।'

भाषिककार्यम्।

(क) अतिविदुषी (ख) विद्योत्तमायै (ग) तुमुन्

7. (क) धीवरः स्वर्णमत्स्यं कस्मै दातुम् इच्छति स्म?

(ख) सत्संगति कस्यै जाड्यं हरति।

(ग) कति जनाः भारत–द्वारे एकत्रिताः भवन्ति।

(घ) कुलीरकः बकस्य समीपं गत्वा कस्य कारणम् अपृच्छत्?

8. (क) लक्ष्मी दानवती यस्य सफलम् तस्य जीवितम्।

(ख) अलसस्य कुतो विद्या अविद्यस्य कुतो धनम्।

(ग) वर्तमानेन कालेन प्रवर्तन्ते विचक्षणाः

(घ) चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयुर्विद्यायशोबलम्।

(ङ) महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नति कारकः।